>

Title: Need to take steps to increase the share of electricity to Bihar from various thermal and hydro-power units.

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): सभापति जी, एक महत्वपूर्ण विषय की तरफ मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। पूरा बिहार अंधेरे में डूबा हुआ है, खेती चौपट हो रही है, उद्योग-धन्धे बन्द हो रहे हैं, विद्यार्थियों की परिक्षाएं चल रही हैं, न तो शहर में, न देहात के इलाके में बिजली है, पूरा बिहार अंधेरे में डूबा हुआ है।

मांग और आपूर्ति में भारी अन्तर है। जहां आज बिहार में तीन हजार मैगावाट बिजली मिलनी चाहिए, उसे 11-12 सौ मैगावाट बिजली मिल रही है। मैं इसलिए इस बात को कह रहा हूं कि बिहार में उत्पादन बिजलीघरों में कम है, केन्द्रीय परिक्षेत्र से ही बिजली बिहार को मिलती है, जहां एलोकेशन दो हजार मैगावाट के आसपास है, वहां उसे बिजली 1000 से लेकर 1100-1200 मैगावाट तक मिल रही है। बिहार प्रदेश में केन्द्रीय परिक्षेत्र के जो ताप बिजलीघर हैं, उनकी बिजली भी बिहार प्रदेश के बाहर चली जा रही है। नादर्न ग्रिड में चली जा रही है, वेस्टर्न ग्रिड में चली जा रही है, सदर्न ग्रिड में चली जा रही है, लेकिन ईस्टर्न ग्रिड की बिजली ईस्टर्न परिक्षेत्र में रहने के बावजूद भी बिहार को नहीं मिल रही है। यह महत्वपूर्ण विषय इस माने में है कि भविष्य में भी जो बिहार उत्पादन केन्द्र बनने वाले हैं, उसकी बिजली भी ले जाने के लिए बाहर तीन हाजर से दस हजार तक की ट्रासमिशन लाइन लगाई जा रही है। आपको भी जानकारी है कि यह पावर ग्रिड की जिम्मेदारी होती है कि राष्ट्रीय पैमाने पर जहां बिजली की कमी हो, मांग और आपूर्ति में अन्तर हो, वहां बिजली दे।

जहां बिहार में सामान्य समय में मांग-आपूर्ति में 15 फीसदी और पीक ऑवर में 30 फीसदी का अन्तर है, वही देश में केवल तीन प्रतिशत का अन्तर है। मैं मांग करना चाहता हूं कि भारत सरकार अपने केन्द्रीय बिजली उत्पादन केन्द्रों से, केन्द्रीय परिक्षेत्र से बिहार को बिजली मुहैया कराये। साथ ही बिहार सरकार को यह बात कहकर कि नगर और शहरों में बिजली के साथ-साथ गांवों के इलाके में भी, जहां खेती चौपट हो रही है, विद्यार्थियों की परीक्षा चल रही है, बिजली दी जाए। पश्चिमी क्षेत्र, जहां बक्सर, कैमूर और रोहताश के इलाके हैं, वे तो बिल्कुल अंधेरे में डूबे हुए हैं।

मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं ।